अफ़सांचे

सआदत हसन मंटो

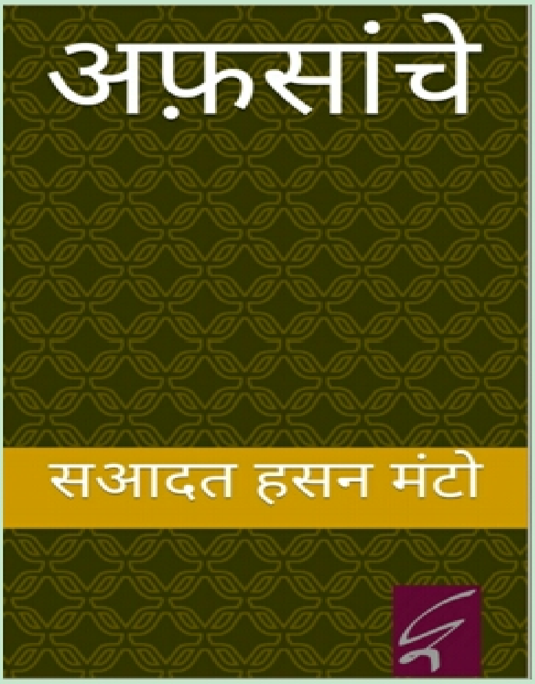

अफसंचे

सआदत हसन मन्टो

THE AAKIL'S PUBLISHERS

First publish in urdu language 1948, by saqi Book Depot, Delhi.

PUBLISHED BY

THE AAKIL'S PUBLICATION INDIA 2018

NEW DELHI

DR.AS.AAKIL@GMAIL.COM

Copyright ©The Aakil's publisher, 2018

THIS book is a work of fiction. Names of persons, organization, businesses, characters, incidents, places and events are

fictional and a product of the imagination of the author. Any resemblance to actual events or places or persons, living or dead, is entirely coincidental. Any reference to hotels, places, businesses, locations and organizations and businesses, while real are used in a way that is purely fictional and have no resemblance to any existing organization, location etc., and any use thereof is not intended to harm, disrespect, defame or derogate any third party.

All rights reserved ®

First Imression 2018

No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of the Aakil's Publishers.

आँखों पर चर्बी

“हमारी क़ौम के लोग भी कैसे हैं…….

पचास सुवर इतनी मुश्किलों के बाद तलाश करके

इस मस्जिद में काटे हैं। वहां मंदिरों में

धड़ाधड़ गाय का गोश्त बिक रहा है।

लेकिन यहां सुवर का मास ख़रीदने के लिए

कोई आता ही नहीं”।

बे ख़बरी का फ़ायदा

लबलबी दबी...... पिस्तौल से झुँझला कर गोली बाहर निकली।

खिड़की में से बाहर झांकने वाला आदमी उसी जगह दोहरा होगया।

लबलबी थोड़ी देर के बाद फिर दबी...... दूसरी गोली भनभनाती हुई बाहर निकली।

सड़क पर माशकी की मशक फटी। औंधे मुँह गिरा और उस का लहू मशक के पानी में हल हो कर बहने लगा।

लबलबी तीसरी बार दबी...... निशाना चूक गया। गोली एक दीवार में जज़्ब होगई।

चौथी गोली एक बूढ़ी औरत की पीठ में लगी...... वो चीख़ भी न सकी और वहीं ढेर होगई।

पांचीं और छट्टी गोली बेकार होगई। कोई हलाक हुआ न ज़ख़्मी।

गोलीयां चलाने वाला भुन्ना गया। दफ़्अतन सड़क पर एक छोटा सा बच्चा दौड़ता दिखाई दिया। गोलीयां चलाने वाले ने पिस्तौल का मुँह उस तरफ़ मोड़ा।

उस के साथी ने कहा। "ये क्या करते हो"?

गोलीयां चलाने वाले ने पूछा। "क्यूँ"?

"गोलीयां तो ख़त्म होचुकी हैं"।

"तुम ख़ामोश रहो...... इतने
से बच्चे को क्या मालूम"?